# वे जो ज्योतिर्मय हैं : ऋग्वेद से उद्धृत ऋचाएँ

## शीतकालीन अयनकाल के सम्मान में

महि ज्योतिर्बिभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः।
आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य॥

हे प्रकाशधारी, दूरदर्शक सूर्यदेव,
हे प्रत्येक नेत्र के आनन्द!
आपके आरोहण करते हुए
प्रखर होते जाते वैभवशाली तेज के दर्शन
करने के लिए हम जीवन जिएँ!

यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः।
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याह्नाह्ना नो वस्यसावस्यसोदिहि॥

आपके प्रकाशित होने से समस्त प्राणी आभासित होते हैं।
आप ओझल हो जाते हैं तो वे विश्राम करते हैं।
हे स्वर्णिम केश वाले सूर्यदेव, हमारी निष्पापता को जानकर,
आप उदित हों; प्रत्येक दिन पिछले दिन से उत्तम हो।

शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन।
यथा शमध्वञ्छमसद्दुरोणे तत्सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम्॥

अपनी दृष्टि, तेजस्विता और चमक से हमें आशीर्वाद प्रदान करें।
सर्दी और गर्मी में आप हमें आशीर्वाद प्रदान करें।
हे सूर्यदेव, जब हम घर में हों और जब हम यात्रा कर रहे हों,

आप हमें आशीर्वाद प्रदान करें,
आप हमें अपनी अद्‌भुत निधियाँ प्रदान करें।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

ऋग्वेद, १०.३७.८-१०, रेमोंदो पनिक्कर, *The Vedic Experience: Mantramanjari* [लॉस एन्जेलस, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रेस, १९७७], पृष्ठ २९४-९५।

## एरिक बेलिन द्वारा परिचय

एक ऐसी सुबह को याद करें जब आपने क्षितिज से ऊपर उदित होते हुए सूरज को देखा हो। आपको कैसा महसूस हुआ जब आपने उन प्रथम किरणों की झिलमिलाहट देखी जो हौले-हौले सभी दिशाओं में फैलते हुए विश्व को प्रकाश के महासागर से भर रही थीं? बादल, वृक्ष और छतें : आपके सामने सब कुछ, धुला-धुला-सा, सोने-सा चमकने लगता है। प्रकाश का ऐसा भव्य प्रदर्शन पूरे पृथ्वी ग्रह पर हर रोज़ होता है, इसे जानकर हम इस बात की सराहना कर सकते हैं कि क्यों भारत की प्राचीनतम शास्त्रीय कृति, ऋग्वेद के रचनाकार सूर्य का वन्दन-पूजन व सम्मान करते थे।

वैदिक काल से ही सूरज को 'सूर्यदेव' के रूप में पूजा जाता रहा है। सूर्य हमें हर तरह से सम्बल प्रदान करता है और हमारा पोषण करता है। हर प्रातः यह विश्व को नए रूप में प्रकट करता है। इसकी जीवनदायी किरणें हमें ऊष्मा देती हैं और हमें अन्न प्रदान करने वाली वनस्पतियों का पोषण करती हैं। हमारे जीवन में इसकी सर्वव्यापक उपस्थिति इसके उदय व अस्त होने की नियमित लय के माध्यम से और इसकी अविचल सदाशयता व स्थिर दीप्ति के रूप में हमें प्रेरणा देती है।

हमारा पृथ्वी ग्रह जब सूर्य की वार्षिक परिक्रमा करता है तो इस दौरान दो क्षण विशेष होते हैं जो चिन्तन-मनन व उत्सव के भाव को जगाते हैं—जून व दिसम्बर माह में होने वाले अयनकाल। पृथ्वी अपनी धुरी पर जिस तरह झुकी हुई है, उसके अनुरूप दिसम्बर माह में एक विशिष्ट क्षण आता है जब दक्षिणी ध्रुव सूर्य के सबसे निकट आता है जो कि उत्तरी गोलार्द्ध में शीतऋतु व दक्षिणी गोलार्द्ध में

ग्रीष्म ऋतु के आगमन का सूचक होता है। जब जून माह में उत्तरी ध्रुव सूर्य के सबसे निकट आता है, तब हर गोलार्द्ध में ग्रीष्म व शीत ऋतुओं का आगमन इसके विपरीत तौर पर होता है।

उत्तरी गोलार्द्ध में शीतकालीन अयनकाल २१ दिसम्बर को है। तब तक दिन छोटे-पर-छोटे होते जाते हैं। अयनकाल के जिस क्षण पृथ्वी और सूर्य की स्थिति पूर्ण एकलयता में आती है, एक उलटी प्रक्रिया का आरम्भ होता है और दिन फिर से लम्बे होने लगते हैं—निस्सन्देह यह उत्सव मनाने का एक कारण है।

अयनकाल के लिए अंग्रेज़ी शब्द solstice [सॉल्स्टिस्] मूलतः लैटिन भाषा से उद्भूत हुआ है जो हमें यह बोध प्रदान करता है कि इस क्षण को युगों से किस प्रकार समझा गया है। लैटिन भाषा में sol [सॉल] का अर्थ है, 'सूर्य' और मूल शब्द stit [स्टिट] का अर्थ है 'खड़े होना', जो इस बात की ओर इंगित करता है कि इन क्षणों में सूर्य स्थिर खड़ा हुआ-सा प्रतीत होता है।

यह ऐसा ही है मानो पृथ्वी अपने सूर्य के साथ एकलयता में श्वास ले रही हो, और अयनकाल का यह विराम उस पावन विराम के समान ही है जो अन्दर आते श्वास व बाहर जाते प्रश्वास के बीच होता है—वह क्षण जब हमारा मन ध्यान में विश्रान्त हो जाता है और हमें परम आत्मा के प्रकाश की अनुभूति करने का प्रवेशद्वार मिल जाता है।

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि आप ऋग्वेद की इन ऋचाओं पर मनन करें और इस प्रकार आप आकाश में विद्यमान उस महामहिमाशाली दीप्ति का यानी पृथ्वी के सूर्य का सम्मान करें—और साथ ही उस दीप्ति का सम्मान करें जो आपकी अपनी आत्मा है, अपने अन्दर का वह 'सूर्य' है जो ध्यान के समय आपके श्वास-प्रश्वास के मध्य के अन्तराल में प्रकट होता है। दोनों ही सूर्य उस महाप्रकाश के मूर्तरूप हैं जो नित्य पोषण करता है और प्रेरणा प्रदान करता है।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।